XIX/157

स्वर्गीय पंडित कृष्ण कान्त मालवीय

लेखक : श्री भगवान दास हालना ।

पंडित कृष्ण कान्त जी मालवीय इस संसार में नहीं है पर उनकी कीर्ती अब भी विधमान है । वे देश और हिन्दी भाषा के योग्य तथा सच्चे सेवक थे । उनका असमय स्वर्गवास होने से उनके बन्धु बान्धुओं और इष्ट मित्रों को महान कष्ट हुआ है ।

सेवा का व्रत

मेरा उनसे सन् १९०९ से परिचय था जब मै 'अभ्युदय' का सहकारी संपादक था । पंडित कृष्ण कान्त जी सन् १९०५ की काशी कांग्रेस में वालन्टियर के रूप में काम कर चुके थे । देश में बंगभंग और स्वदेशी आन्दोलन के कारण उथल पुथल मची हुई थी । हमारे नवयुवक बन्धु कृष्ण कान्त जी पर भी इसका विशेष प्रभाव पड़ा । वे बी० ए० पास हो चुके थे और वकालत पढ़ते थे । उन्होंने वकालत पढ़ना छोड़कर देश और हिन्दी भाषा की त्यागपूर्वक सेवा करने का व्रत लिया ।

मालवीय जी का परिवार देश सेवा के लिए प्रसिद्ध है । इस वंश में पूज्य मालवीय जी के बाद सब से पहले देश एवं भाषा की सेवा लगातार करने वाले हमारे प्रिय स्नेही पंडित कृष्ण कान्त जी ही है । सन् १९०९ में 'अभ्युदय' में जब उनसे मेरा परिचय हुआ तब वे हिन्दी के अच्छे लेखक और पत्रकार बनने का अभ्यास कर रहे थे । वे विद्वान तो थे ही और दूसरी भाषा संस्कृत थी , अतएवथोड़े ही काल में वे सफल लेखक और योग्य संपादक बन गए । देश सेवा और हिन्दी के प्रेम से प्रेरित होकर सन् १९११ में उन्होंने 'मर्यादा' मासिक पत्रिका निकाली । चार पांच वर्ष बाद पूज्य मालवीय जी ने 'अभ्युदय' का सब भार उन्हे दे दिया और वे ही उसका संपादन और संचालन करने लगे ।

पंडित कृष्ण कान्त जी राजनीतिक और अन्तर्राष्ट्रीय विषयों के भी अच्छे ज्ञाता थे । पिछले युद्ध के समय 'अभ्युदय' में 'वासुदेव' के कल्पित नाम से उनकी जो लेखमाला निकली थी वह बड़ी ही महत्वपूर्ण थी । उन्होंने कई पुस्तके भी लिखी है वे हिन्दू मुसलमान दोनों के सच्चे हितैषी थे और अपने अखबार के द्वारा निष्पक्ष और निर्भय होकर देश की सेवा करते थे ।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

राजनीतिक जीवन

सन् १६२८ में वे और पूज्य मालवीय जी के कनिष्ठ पुत्र पंडित गोविन्द मालवीय जेल में गए । मै भी उस समय आगरे और लखनऊ में उनके साथ जेल में था । सन् १६२४ में जब कांग्रेस की स्वराज्य पार्टी ने असेम्बली में जाना निश्चय किया उसी समय पंडित मोतीलाल जी नेहरू ने पंडित कृष्ण कान्त को श्री सी० वाई० चिन्तामणि के खिलाफ खड़ा किया । पंडित कृष्ण कान्त जी की करीब ३००० वोटों से जीत हुई । तब से वे प्राय: बराबर असेम्बली के मेम्बर रहे है ।

साधारण बातों में कभी कभी कांग्रेस के कार्यों से मतभेद रहने पर भी वे सदा उसके पक्के पृष्ठ पोषक और अनुयायी रहे है । इधर वे तीन चार महीने से दिल्ली के इरविन अस्पताल में बीमार थे, उनके पुत्र पंडित पद्म कान्त मालवीय जेल में थे । इस समय उनके भतीजे पंडित श्रीधर मालवीय ने जो एक बड़े योग्य और होनहार युवक है उनकी बड़ी सेवा की । पर काल किसी का मुलाहिजा नहीं करता । यदि वे बीमार न होते तो निश्चय ही यू० पी० से सत्याग्रह में जो बैच प्रथम ही प्रथम जाता उसमें वे भी होते । उनकी अवस्था करीब ५७ या ५८ के होगी पर उनकी हिम्मत कभी कम नहीं हुई । वे युद्ध से हटना जानते ही नहीं थे । कई बार जेल हो आये थे । वे वस्तुत: एक बड़े सच्चे, निर्भीक और त्यागी देश भक्त सज्जन थे ।

भारत गवर्मेन्ट के होम मेम्बर सर एलेक्जेंडर मुडीमैन उनसे काफी स्नेह करते थे । सर मुडीमैन ने उनकी सिफारिस से कई राजनीतिक कैदियों को छोड़ दिया था । एक बार सर मुडीमैन ने उनसे कहा `पंडित जी, आपकी आर्थिक दशा अच्छी नहीं है, यदि आप चाहें तो हम आपको किसी रजवाड़े में भेज दें, वहां आपको हजार बारह सौ महीना मिल जायगा । आप मौज से रहेंगे ।`

पंडित कृष्ण कान्त जी ने उत्तर दिया `हमें रुपया संग्रह करके क्या करना है । हमें तो ब्राह्मण है ऋषियों की सन्तान है । हमारे पूज्य चाचा मालवीय जी त्याग का जीवन व्यतीत करते है । और हमें भी यही पसन्द है । आपकी मंगल कामना के लिए धन्यवाद ।` यह बात हमने स्वयं अपने स्नेही बन्धु से ही सुनी थी । इस घटना से पता लगेगा कि वे वास्तव में ऊंचे आदर्श के अनुसार त्याग और कष्ट का जीवन व्यतीत करने वालों में से थे ।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA
राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

साहित्य प्रेम

वे अच्छे वक्ता और कवि भी थे और उर्दू कविता का उनपर काफी प्रभाव पड़ा था। सन् १९२१ में आगरा जेल में हर हफ्ते कवि सम्मेलन और मुशायरे होते थे जिनमें नई नई फड़कती हुई राष्ट्रीय कविताएं पढ़ी जाती थी। पंडित कृष्ण कान्त जी ने 'अभ्युदय' प्रेस से उन सब कविताओं का संग्रह छापा था।

वे बड़े सुशील, उदार और निष्कपट सज्जन थे। सदा हंसमुख रहते थे। पूज्य मालवीय जी महाराज को इस वृद्धावस्था में अपने इस योग्य और प्रिय भतीजे कृष्ण कान्त के निधन से बड़ा शोक हुआ है। परमात्मा उनकी स्वर्गीय आत्मा को शांति प्रदान करे।

उनके पुत्र पंडित पद्म कान्त मालवीय एक अच्छे कवि, लेखक और सम्पादक है। फारवर्ड ब्लाक में शामिल है। पिछले मई महीने ही बिना मुकदमा चलाये जेल में नजरबंद कर लिये गये। अपने पिता पंडित कृष्ण कान्त जी के बहुत अधिक बीमार होने पर कुछ दिनों के लिये वे पैरोल पर छोड़े गये थे। उनके इस महान संकट में हम पंडित पद्म कान्त और सभ्य कुटुम्बियों से हार्दिक समवेदना प्रकट करते है। वे योग्य पिता की योग्य सन्तान है, अतः हम उनसे आशा करते है कि वे हर तरह अपने पूज्य पिता के पथ का ही अनुगमन करेंगे।

पंडित कृष्ण कान्त जी जैसे योग्य देश सेवक के लिये भी स्मारक बनने का सवाल उठ सकता है। हमारी राय में उनका सच्चा स्मारक यही हो सकता है कि हम लोग उनके 'अभ्युदय' पत्र की सहायता करें। उसकी आर्थिक दशा अच्छी नहीं है। और वह किसी तरह लस्टम पस्टम ही चल रहा है। पंडित कृष्ण कान्त मालवीय जी के धनीमानी मित्रों का जो उनसे पूरी तरह स्नेह करते थे, कर्तव्य है कि वे उनके 'अभ्युदय' को अच्छी तरह चलाकर स्वर्ग में उनकी आत्मा को सच्ची शांति पहुंचावें। कोई आठ दस बरस हुए पूज्य मालवीय जी 'अभ्युदय' को लिमिटेड कंपनी बनाकर एक लाख की पूंजी से सुन्दर रूप में निकालना चाहते थे। क्या वे भी इधर कुछ ध्यान देने की कृपा करेंगे।

.....

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA